

यह मेरा नहीं. बाबा का कार्य है

दादी प्रकाशमणि जी का जीवन संदेश

हर्षितमुख और दिव्य मुस्कान

प्रकाशमणि का हर्षित मुख, जैसे स्नेह का उजियारा,

दिव्य मुस्कान में झलकती थी, मन की निर्मल धारा।

मिलते सबसे प्रेम भाव से, देते शुभ संदेश,

मौन रहकर भी बौंट जाते, खुशियों का परिवेश।

उनकी मुस्कान सीखा गई- प्रसन्नता की सच्चा विशेष ।।

कुछ व्यक्तित्व केवल अपने शब्दों से नहीं, बल्कि अपने जीवन की सृण्व से लोगों के हृदय को स्पर्श करते हैं। ऐसे ही दिव्य व्यक्तित्व थीं दादी प्रकाशमणि। उनका जीवन प्रेम, सेवा, विनम्रता और ईश्वरीय समर्पण का सुंदर उदाहरण था। वे जहाँ भी रहीं, वहाँ लोगों को केवल ज्ञान नहीं मिला, बल्कि अपनापन, आश्रय और परमात्मा के प्रेम का अनुभव हुआ। उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता थी - वे स्वयं को कभी कर्ता नहीं मानती थीं। उनके हर कार्य में एक ही भाव दिखाई देता था - "यह मेरा कार्य नहीं, बाबा का कार्य है; मुझे तो केवल निमित्त बनने का सौभाग्य मिला है।"

प्रेम का अथाह सागर

दादी जी का प्रेम सीमित नहीं था। उनका स्नेह किसी व्यक्ति, वर्ग या देश तक सीमित नहीं रहा। जो भी उनके संपर्क में आया, उसने अनुभव किया कि वे सुनती भी थीं और स्वीकार भी करती थीं। किसी की गलती को फकड़कर रखना उनकी प्रकृति नहीं थी। वे व्यक्ति

को उनके दोषों से नहीं, उसकी विशेषताओं से देखती थीं। यही कारण था कि उनके पास आने वाला व्यक्ति हल्का, सुरक्षित और प्रेरित महसूस करता था।

उनका चेहरा सदैव प्रसन्न रहता था। परिस्थितियाँ कैसी भी हों, उनके भीतर की शांति और हार्म बाहर झलकते थे। उनका जीवन सिखाता है कि सच्चा आध्यात्मिक जीवन वही है जो चेहरे पर सहज मुस्कान और व्यवहार में प्रभुता बनकर दिखाई दे।

आत्मा जागृति और विश्व सेवा का संकल्प

दादी प्रकाशमणि जी के जीवन का उद्देश्य केवल स्वयं का आध्यात्मिक उत्थान नहीं था, बल्कि सम्पूर्ण विश्व तक परमात्मा का संदेश पहुँचाना था। उनके भीतर यह दृढ़ विश्वास था कि परमात्मा मानवता को पुनः श्रेष्ठ बनाने के लिए आया है। वे बार-बार लोगों को प्रेरित करती थीं कि समय केवल परिस्थितियाँ देखने का नहीं, बल्कि स्वयं को बदलने का है। उन्होंने देश-

विदेश के अनेक स्थानों पर जाकर आत्मजागृति का संदेश दिया। उनका विश्वास था कि विश्व परिवर्तन की शुरुआत व्यक्ति परिवर्तन से होती है। जब मनुष्य अपने भीतर शांति, प्रेम और पवित्रता लाता है, तब समाज और संसार भी बदलता है।

"कर्तापिन नहीं, निमित्त भाव" - उनकी जीवन मंत्र

दादी जी के व्यक्तित्व की सबसे प्रेरणादायक विशेषता उनका निमित्त भाव था। वे कहती थीं - "मुझे यह कार्य कठिन नहीं लगता क्योंकि यह मेरा कार्य नहीं है, यह बाबा का कार्य है।"



अमरावती-उ.प्र.। निम्न फैलेस में आयोजित तीन बहनों ब्र.कु. अर्चना,अमरावती, ब्र.कु. रवि,राजिनी तथा ब्र.कु. पुनम,जोध के 'मल्लिकार्जुन दिव्य समर्पण समारोह' का दीप प्रज्वलन कर शुभारम्भ करते हुए विधायक राजीव तपस, राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी,रवि, राजयोगिनी ब्र.कु. सुक्ला दीदी,हरि नगर,दिल्ली, राजयोगिनी ब्र.कु. भवत भूषण,ज्ञान भवन सोवियर स्ट्रीट सेंटर, पंचोक्त, राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी,मुठाजवाड़, ब्र.कु. सागा,रवि तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



भरतपुर-राज.। मातेवरी जगदम्बा सरस्वती की 61वीं पुण्य तिथि पर ब्रह्मचरित् अर्पित करने के पश्चात् समूह चित्र में गणपति महादेव अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, अभय कमांड कंट्रोल, अनुपम गर्ग,उपाध्यक्ष वैश्य फेडरेशन न्यू दिल्ली, बबिता शर्मा,प्रिंसिपल जिला अग्रथ बरेंस, राजयोगिनी ब्र.कु. कविता दीदी, ब्र.कु. सुश्रुत किशोर, ब्र.कु. बबिता, ब्र.कु. प्रवीण, ब्र.कु. गौर तथा अन्य।



पहरदी-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् विधायक नौधम चौधरी को परमपूज्य स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रीति एवं ब्र.कु. निखने।



तेह्रगढ़-उत्तराखण्ड। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी, ब्र.कु. गौत, ब्र.कु. शानु, ब्र.कु. आरती,रुचिकेश, ब्र.कु. सुशील, आचार्य दुर्गा आर्षा, शिवाजिद अशीष सिंघल, लीना सिंघल, गोपल नारसन तथा अन्य अतिथिगण।



रूपवास-विनायक नगर(राज.।) भरतपुर जिला संयोजक कृष्ण जाट युवा मोर्चा चोजेरी को ईश्वरीय सीमा भेंट करते हुए ब्र.कु. बबिता।



बहादुरगढ़-हरियाणा। तीन दिवसीय योग तपस्या धर्म का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए नगर परिषद चेयरमैन श्रीमती सरोज राठी, ब्र.कु. अमृता, ब्र.कु. विनीता, ब्र.कु. अंजलि, राजयोगिनी ब्र.कु. पुनम दीदी,इंदर, ब्र.कु. रंजु, ब्र.कु. सुरेंद्र एवं ब्र.कु. दिनेश।